

Padma Shri



DR. ARJUN SINGH SHEKHAWAT

Dr. Arjun Singh Shekhawat is a scholar, educationist, thinker and writer. He served as the President of District Teachers Association for 8 years from 1970 to 1978; as District Convenor of the Indian Cultural Fund for 9 years and as Education Extension Officer for 10 years. Currently at the age of 87 years, he is the founder President of Rajasthan Gyanpeeth Sansthan and Adivasi Academy for the last 15 years. He has been struggling since 1992 to get the Rajasthani language included in the 8th schedule of the Constitution. Currently he is the district President of Rajasthani Conflict Committee.

2. Born on 4th February, 1934 in Bhadarlau, a small village in Pali district, Rajasthan, Dr. Shekhawat passed his high school examination from Jodhpur. He started his career as Locust Technical Officer (Locust Control Center) and later joined the post of a teacher. He passed the examination of M.A. in Hindi & Rajasthani, Literature Ratna, Ayurveda Ratna & Vedacharya while working as a teacher. He received honorary degree of Ph.D. from Rajasthani Forum (2003) and Vikram Hindi Sheela Peeth, Bihar in 2015.

3. Dr. Shekhawat's first book on Rajasthani literature and culture "Bhil Dharti Meh Pavno" was published in 1952. He has written a total of 30 books, significant among these are "Anboliya Bol" (1976), "Rajasthani Vrat Kathava" (1999), "Bhakar Ra Bhomiya" (2006) "Bijakshar Sanskriti" (2009), "Aadavalo Ardayo" (2010), Mailo Minakh (2016). He translated Russian story "Green Valley" into Rajasthani "Lil Ki Ghati" and also translated English stories, Malayalam and Hindi poetries into Rajasthani. He collected very rare information about Garasiyas tribes' folk literature and culture. He is the only writer who wrote about tribals, after spending days in the inaccessible and risky tribal region. Presently he is writing about Dewasi and Kalbelia tribes.

4. Dr. Shekhawat also represented Rajasthan in various cultural programmes like Tribal Academy Tejgarh Gujrat (1999), Bhasha Bodh Institute Baroda (2005), Indian Cultural Fund Delhi (2004-2015), Western Cultural Centre 'Jaipur (2006-07) Indira Gandhi National Centre for the Arts, Delhi (2013), Sangeet Natak Academy, Delhi (2014). In V.D.S. Literature Seminar (2002) Buckingham, London his letter on Vedas was accepted.

5. Dr. Shekhawat received 25 awards namely, National Unit Award for excellency (1994), Arch excellency Award (1993-94) from A.V.I. America "Man of the Year" (1996), UNESCO Consciousness Award (2002), Rashtriya Ratna & Bharat Gaurav from Narayan Seva Sansthan, Rajasthani Ratan & Hindi Service Award (2005), Bhartiya Award (2006) from Rajasthani Language Literature Academy, Ambedkar Fellowship & Medal (2007), Karnadhar Award from Rajasthan Patrika (2009), Translator Prize (2009), "Marwar Ratna (2015) Hifa Hero Award from Zila Parishad in (2015). He also produced four Tribal films with the help of University Grants Commission.



डॉ. अर्जुन सिंह शेखावत

डॉ. अर्जुन सिंह शेखावत एक विद्वान, शिक्षाविद, विचारक और लेखक हैं। उन्होंने वर्ष 1970 से 1978 यानी 8 वर्ष तक जिला शिक्षक संघ के अध्यक्ष; 9 वर्ष तक भारतीय सांस्कृतिक कोष के जिला संयोजक और 10 वर्ष तक शिक्षा विस्तार अधिकारी के रूप में कार्य किया। वह पिछले 15 वर्षों से राजस्थान ज्ञानपीठ संस्थान और आदिवासी अकादमी के संस्थापक अध्यक्ष हैं। वह वर्ष 1992 से राजस्थानी भाषा को संविधान की 8वीं अनुसूची में शामिल करने के लिए संघर्ष कर रहे हैं। वर्तमान में वह राजस्थानी संघर्ष समिति के जिलाध्यक्ष हैं।

2. 4 फरवरी, 1934 को राजस्थान के पाली जिले के एक छोटे से गाँव भदरलाऊ में, जन्मे डॉ. शेखावत ने हाई स्कूल की परीक्षा जोधपुर से पास की। उन्होंने टिड्डी तकनीकी अधिकारी (टिड्डी नियंत्रण केंद्र) के रूप में अपने करियर की शुरुआत की और बाद में एक शिक्षक के पद पर आसीन हुए। उन्होंने शिक्षक के रूप में काम करते हुए हिंदी और राजस्थानी में एम. ए. साहित्य रत्न, आयुर्वेद रत्न और वेदाचार्य की परीक्षा उत्तीर्ण की। उन्होंने राजस्थानी फोरम (2003) और वर्ष 2015 में विक्रम हिंदी शीलापीठ, बिहार से पीएच.डी. की मानद उपाधि प्राप्त की।

3. डॉ. शेखावत की राजस्थानी साहित्य और संस्कृति पर पहली पुस्तक "भील धरती मेह पावनो" वर्ष 1952 में प्रकाशित हुई थी। उन्होंने कुल 30 पुस्तकें लिखी हैं, जिनमें "अंबोलियाबोल" (1976), "राजस्थानी व्रत कथावा" (1999), "भाकर रा भोमिया" (2006), "बीजाक्षर संस्कृति" (2009), "आदावलो अर्दायो" (2010), मेलो मिनख (2016) उल्लेखनीय हैं। उन्होंने रूसी कहानी "ग्रीन वैली" का राजस्थानी में "लील की घाटी" नाम से अनुवाद किया और अंग्रेजी कहानियों, मलयालम और हिंदी कविताओं का राजस्थानी में अनुवाद भी किया। उन्होंने गरासिया जनजातियों के लोक साहित्य और संस्कृति के बारे में बहुत दुर्लभ जानकारी एकत्र की। उन्होंने विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की मदद से चार जनजातीय फिल्मों का निर्माण भी किया। वह एकमात्र लेखक हैं जिन्होंने दुर्गम और जोखिम भरे आदिवासी क्षेत्र में रहकर जनजातियों के बारे में लिखा। वर्तमान में, वह देवासी और कालबेलिया जनजातियों के बारे में लिख रहे हैं।

4. डॉ. शेखावत ने जनजातीय अकादमी तेजगढ़, गुजरात (1999), भाषा बोध संस्थान बड़ौदा (2005), भारतीय सांस्कृतिक कोष दिल्ली (2004-2015), पश्चिमी सांस्कृतिक केंद्र जयपुर (2006-07) इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, दिल्ली (2013), संगीत नाटक अकादमी, दिल्ली (2014) जैसे विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों में राजस्थान का प्रतिनिधित्व भी किया। बकिंघम, लंदन के वी.डी.एस. साहित्य संगोष्ठी (2002) में वेदों पर उनके पत्र को स्वीकार किया गया था।

5. डॉ. शेखावत को 25 पुरस्कार प्राप्त हुए, जिनमें नेशनल यूनिट अवार्ड फॉर एक्सीलेंसी (1994), ए.वी.आई. अमेरिका का आर्क एक्सीलेंसी अवार्ड (1993-94), "मैन ऑफ द ईयर" (1996), यूनेस्को कॉन्शियसनेस अवार्ड (2002), नारायण सेवा संस्थान का राष्ट्रीय रत्न और भारत गौरव, राजस्थानी रत्न और हिंदी सेवा पुरस्कार (2005), राजस्थानी भाषा साहित्य अकादमी से भारतीय पुरस्कार (2006), अम्बेडकर फेलोशिप और पदक (2007), राजस्थान पत्रिका की ओर से कर्णधार पुरस्कार (2009), अनुवादक पुरस्कार (2009), "मारवाड़ रत्न (2015), जिला परिषद से हाइफा हीरो अवार्ड (2015) शामिल हैं।